

चौखम्बा संस्कृत सीरीज

१३९

श्रीगौडपादाचार्य-विरचिता

सुभगोदयस्तुतिः

श्रीविद्या-सिद्धान्त-साधना तथा 'राजराजेश्वरी' हिन्दी टीका समन्विता

व्याख्याकार

डॉ० श्यामाकान्त द्विवेदी 'आनन्द'

एम. ए., पी-एच. डी., व्याकरणाचार्य

एम. एड., डी. लिट.

(30 प्र० संस्कृत एकेडमी द्वारा अनेकधा पुरस्कृत)



चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
दो शब्द	१-२
प्रस्तावना	३-१५१
(प्रथम खण्ड)	
प्रथम अध्याय (श्रीविद्या-सिद्धान्त और साधना)	३-३४
ग्रन्थकार गौड़पादाचार्य और उनकी कृतियाँ	३
गौड़पादाचार्य और अद्वैतवाद	३
गौड़पाद माण्डूक्यकारिकाकार के रूप में	५
गुरु-परम्परा और गौड़पादाचार्य	७
आचार्य गौड़पाद का जीवन-परिचय	८
आचार्य शंकर एवं गौड़पादाचार्य	१०
शैवाद्वैत, शाक्ताद्वैत एवं शाङ्करकेवलाद्वैत	१०
गौड़पादाचार्य का आविर्भावकाल	१४
आचार्य गौड़पाद—कृतित्व और दार्शनिक दृष्टि	१५
माण्डूक्यकारिका	१५
सांख्यकारिका-भाष्य (गौड़पाद-प्रणीत)	३१
द्वितीय अध्याय ('सुभगोदयस्तुति' और गौड़पादाचार्य)	३५-१२४
सुभगोदयस्तुति और गौड़पादाचार्य के सिद्धान्त	३५
सुभगा और सुभगोदय	३५
'श्रीविद्या' का सैद्धान्तिक पक्ष	३९
षट्त्रिंशतत्त्व और उनका वर्गीकरण	४४
भगवती का त्रिखण्डात्मक, अमात्मक एवं षट्चक्रात्मक स्वरूप	५३
भगवती का स्वरूप	५४
भगवती का षोडशी स्वरूप और उसकी विशिष्टता	५८
भगवती की पूजा	५८
पूजा एवं षोडश ऐक्य का प्रभाव	६५
द्वादश विद्यायें	७७
श्रीविद्या साधना की साधन-सम्पत्ति	८०
गौड़पादोक्त साधना-विधान	८३
गौड़पादोक्त श्रीविद्या साधना में योग की भूमिका	८९
नाडी योग और अमृत प्रवाह	९५
चन्द्रमा से अमृत-स्राव	९५
सूर्य चन्द्र योग एवं कुण्डलिनी योग	९६
यंत्र और वर्णमाला	
षट्चक्र और उनका विवरण	

विषय	पृष्ठांक
भगवती की ध्यान साधना	९९
भगवती की पूजा के चक्र स्थान	१०१
श्रीविद्या-साधना में ऐक्य विधान	१०२
पञ्चदशीविद्या के वर्णों का श्री चक्र एवं पिण्डस्थ षट्चक्रों के साथ ऐक्य	१०८
'ज्ञानार्णवतन्त्र के आधार पर पञ्चदशी विद्या के वर्णों का श्रीचक्र के साथ ऐकात्म्य	१०९
'कला' एवं चरण का ऐक्य	११२
'बिन्दु' का 'नाद' से ऐक्य	११३
पिण्डस्थ षट्चक्रों एवं श्रीचक्र में ऐक्य	११४
आचार्य लक्ष्मीधर द्वारा प्रस्तुत ऐक्यानुसन्धान का स्वरूप	११६
श्रीविद्या में ऐक्यानुसन्धान के दो रूप	११६
'श्रीविद्यारत्नसूत्रम्'	११७
तृतीय अध्याय (श्रीविद्या सिद्धान्त और साधना)	१२५-१९५
'श्रीचक्र' और उसका स्वरूप	१२५
'श्रीविद्या'—सिद्धान्त और साधना (परशुराम की दृष्टि)	१२५
श्री चक्र और उसका स्वरूप	१२६
चतुर्दशार चक्र	१३०
श्रीचक्र का महत्त्व	१३२
दशारद्वय	१३३
स्पन्दत्रय एवं चक्र	१३५
अष्टार चक्र	१३५
श्रीविद्या की उपासना में श्रीयंत्र	१३७
श्रीचक्र विवरण	१४४
तान्त्रिक पूजा में निहित सिद्धान्त	१४५
अ-क-थ चक्र	१४८
भगवती ललिता की पूजा	१४९
देवी के साथ तादात्म्य की भावना	१४९
शाक्ताद्वैत और काश्मीरीय अद्वैत का स्वरूप	१५०
श्रीयन्त्र और भगवती ललिता की पूजा	१५१
कौलमत और समयमत	१५४
मातृका और पीठ में ऐक्य	१५९
श्रीविद्या के षड्विध संकेतितार्थ	१६०
श्रीविद्योपासना और अन्तर्यामि	१६१
श्रीचक्र	१६२
श्रीविद्या—सिद्धान्त और साधना	१६५
श्रीविद्योपासना में निर्धारित क्रम विधान	१६९

विषय	पृष्ठांक
'परशुराम कल्पसूत्र' और श्रीविद्योपासना	१७०
गणपति (चित्र)	१७५
गणेश यंत्र	१७६
ललिता क्रम	१८०
पराक्रम	१८९
होमविधि	१९१
सर्वसाधारण क्रम	१९२

द्वितीय खण्ड

(मूल श्लोक एवं उनकी व्याख्या)

भगवती की मंगलाचरणात्मक वन्दना (श्लोक क्र. १)	१९९
भगवती की स्वरूप एवं उसके साक्षात्कार के साधन (श्लोक क्र. २)	२०४
षट्ग्रंथि भेदन एवं मन का चन्द्रमा में लय (श्लोक क्र. ३)	२१०
क्षुधार्त कुण्डलिनी का चन्द्रमा को डसना (श्लोक क्र. ४)	२४०
भगवती का चन्द्रकलात्मक 'परकला' का स्वरूप (श्लोक क्र. ५)	२४६
भगवती कुण्डलिनी की विविध अवस्थायें (श्लोक क्र. ६)	२५३
कुलगृह (भगवती का राजसौध) (श्लोक क्र. ७)	२५९
भगवती का षट्चक्रात्मक राजसदन (श्लोक क्र. ८)	२८५
भगवती के रणरज और कालतत्त्व (श्लोक क्र. ९)	२९४
श्रीचक्रस्थ नवचक्रों एवं पिण्डस्थ षट्चक्रों एवं पिण्डस्थ षट्चक्रों में अन्तर्सम्बन्ध (श्लोक क्र. १०)	३०२
शिवचक्र-शक्ति चक्र अतन्तर्सम्बन्ध (श्लोक क्र. ११)	३२२
शिवशक्ति में षड्विध ऐक्य एवं सामयिकों की सपर्या का विधान (श्लोक क्र. १२)	३२७
कला, नाद, बिन्दु, शिव-शक्ति में ऐक्य एवं समयमत की पूजा (श्लोक क्र. १३)	३३६
'मणिपूरक चक्र' में भगवती का साक्षात्कार (श्लोक क्र. १४)	३४५
षोढा ऐक्य (श्लोक क्र. १५)	३५३
भगवती त्रिपुरा का स्वरूप (श्लोक क्र. १६)	३५८
श्रीचक्रस्थ योनियाँ एवं विभिन्न उपचक्र (श्लोक क्र. १७)	३६२
कौल एवं मिश्रमत का खण्डन एवं समयाचार का प्रतिपादन (श्लोक क्र. १८)	३८१
पञ्चदशाक्षरी विद्या और उसका स्वरूप (श्लोक क्र. १९)	३९२
श्रीविद्या के खण्डत्रय (श्लोक क्र. २०)	३९४
अकार एवं क्षकार का महत्त्व (श्लोक क्र. २१)	३९६
समयाचार में पूजा-विधान कर स्वरूप (श्लोक क्र. २२)	४०४

विषय

पञ्चदशी मंत्र के लय का स्थान (श्लोक क्र. २३)	४०९
विश्व की भगवती परा भट्टारिका के साथ ऐक्य एवं वर्णों की	४१६
यन्त्र के साथ एकता (श्लोक क्र. २४)	४२२
वर्णों की यंत्र, तिथि एवं नित्याओं के साथ	४३७
श्रीविद्या की एकता (श्लोक क्र. २५)	४४१
षोडशी कला का सर्वकारणत्व की दृष्टि से सर्वोच्च महत्त्व (श्लोक क्र. २६)	४४५
'क्षकार का सर्वातिशायी महत्त्व (श्लोक क्र. २७)	४५२
मणिपूर चक्र एवं भगवती का स्वरूप (श्लोक क्र. २८)	४५३
संवित्कमल में संवित पूजा (श्लोक क्र. २९)	४६०
विशुद्धि चक्र कला, नित्या, तिथि (श्लोक क्र. ३०)	४८६
'समया' की पूजा, शुक्तपक्ष एवं ग्रथित्रय (श्लोक क्र. ३१)	४९७
अमावस्या तिथि पर पूजा का निषेध (श्लोक क्र. ३२)	५०३
अमावस्या का यौगिक स्वरूप (श्लोक क्र. ३३)	५०७
ब्रह्मग्रंथ का उद्भेदन (श्लोक क्र. ३४)	५०९
'श्रीचक्र' 'सरधा' बैन्दव स्थान (श्लोक क्र. ३५)	५१२
देवी का स्वरूप (श्लोक क्र. ३६)	५१६
षट्चक्र एवं श्रीचक्र में ऐक्य (श्लोक क्र. ३७)	५२१
कुण्डलिनी शक्ति का जागरण (श्लोक क्र. ३८)	५२२
साम्य के प्रकार और उसका महत्त्व (श्लोक क्र. ३९)	५२४
वशिनी आदि शक्तियों की वर्णात्मकता (श्लोक क्र. ४०)	५३०
'श्रीचक्र' के प्रस्तारत्रय की विवेचना (श्लोक क्र. ४१)	५३८
षट्चक्रों में 'तामिश्र चक्र' (श्लोक क्र. ४२)	५४४
कौलों की पूजा का विरोध (श्लोक क्र. ४३)	५४८
नवात्मा शिव के नौ व्यूह (श्लोक क्र. ४४)	५५०
भगवती की पूजा के दो प्रकार (श्लोक क्र. ४५)	५७०
सहस्रार से उत्पन्न मूलभूत चक्रद्वय (श्लोक क्र. ४६)	५९२
सहस्रार का सर्वोत्पादक स्वरूप (श्लोक क्र. ४७)	५९८
एक ही 'परमबिन्दु' से समस्त चक्रों का उद्भव (श्लोक क्र. ४८)	६०१
कौलों और समयमार्गियों की उपासना में भेद (श्लोक क्र. ४९)	६०२
श्रीविद्या-सम्बद्ध शास्त्रों का प्रतिपाद्य विषय (श्लोक क्र. २०)	६०५
परमसौभाग्य स्वरूप सायुज्य मुक्ति की प्राप्ति (श्लोक क्र. ५१)	
यथा स्वेच्छा निर्विघ्न यात्रा करने एवं पीयूषपान की सिद्धि (श्लोक क्र. ५२)	